IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

मुगलकालीन भारत की वास्तुकला

डॉ. सुखेन्द्र सिंह
अतिथि विद्वान इतिहास विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, जिला सतना (म.प्र.)

मुगलकाल में वास्तु विन्यास को लेकर शुरू हुई परम्परा अकबर के काल में तो फलीभूत तो हुई परन्तु जहाँगीर शिल्पकला की अपेक्षा चित्रकारी और बागबानी में अधिक अभिरुचि रखता था, अस्तु उसके शासन काल में मुगल स्थापत्य कला में कोई विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। फिर भी भवन निर्माण का कार्य पूर्ववत चलता रहा और सम्राट ने भी कुछ महत्त्वपूर्ण इमारतों का निर्माण करवाया। जिनकी शिल्प शैली की ईरानी–भारतीय परिदृश्य की रही। नक्काशी और रंग–विधान मूलतः ईरानी ही देखा गया पर भारतीय शिल्प विधान की अनदेखी नहीं हुई। जहाँगीर की कला प्रियता उसके वास्तुविन्यास में अन्तर्निहित चित्रकला का दिग्दर्शन कराती है। सिकन्दरा में अकबर को मकबरे का निर्माण कार्य यद्यपि अकबर की योजना के अनुरूप उसी के शासन काल में प्रारम्भ किया गया, इसका समापन 1613 ई० में जहाँगीर की देख रेख में हुआ। जहाँगीर के शासन काल में अन्य उल्लेखनीय भवन लाहौर के निकट शाहदरा में स्थित उसका मकबरा है जिसका नक्शा और योजना उसने स्वयं तैयार किया था। यह अकबर के मकबरे की लम्बाई–चौड़ाई के अनुपात में छोटा है। इस मकबरे के ऊपर संगमरमर का एक मंडप था जिसे सिक्खों ने इस पर अपने अधिकार के समय उतार लिया था। समाधि के भीतरी हिस्सा में संगमरमर की पच्चीकारी तथा चिकने और रंगीन प्रस्तरों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। वस्तुतः इसे एक प्रभावशाली इमारत कहा जा सकता है।

चार बाग पद्धति पर ही अकबर के मकबरे का विन्यास हुआ अर्थात सम्पूर्ण बाग को चार समान भागों में बांट दिया गया। ठीक केन्द्र में मकबरा बनाया गया। चारों भुजाओं के मध्य में विशाल द्वार बनाये गये। दक्षिण की ओर का द्वार मुख्य द्वार है, शेष तीनों अलंकारिक है। मुख्य मकबरे से इन्हें पत्थर की चौड़ी–चौड़ी बीघिकाओं द्वारा जोड़ दिया गया। इन पर नालियों, तालाबों और झरनों की व्यवस्था की गई। इस प्रकार इमारत को एक अत्यन्त सुन्दर स्थिति में प्रस्तुत किया गया है।

जहाँगीर की बेगम मिर्जा ग्यासबेग की पुत्री मेहरून्निसा थी। जिसे बाद में नूरजहां के नाम से चर्चा में आई। नूरजहाँ अपने राजनैतिक चातुर्य और प्रवर चिंतन से धीरे–धीरे जहांगीर के शासन काल में पर्दे के पीछे बैठकर सत्ताा संचालन की गतिविधियों पर रूचि लेने लगी। नूरजहां ने अपने माता–पिता के लिए भी आगरे में एक बड़ा सुन्दर मकबरा बनवाया। ये दोनों मकबरे इस काल के ही नहीं अपितु मुगल वास्तुकला की भी श्रेष्ठ कृतियां हैं।[1]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

हम एतमादुद्दौला को चाहे ललित एवं अनुपम कला की दृष्टि से देखें अथवा ललित कला के नमूने की दृष्टि से, यह अपना सानी नहीं रखता है। कला के क्षेत्र में यह उत्कृष्ट अर्पित स्नेह का प्रतीक और मुगलकाल में प्रचलित उपलब्धियाँ उच्च कोटि की कला का नमूना है। ऐसी वास्तु कलाएँ कम ही स्थापत्य विन्यास में मुखरित होती है। इस मकबरे का निर्माण 1622 के पश्चात नूरजहां ने कराया। यह यमुना के बायें किनारे पर स्थित है। यह नूरजहां के माता–पिता अस्मत बेगम और मिर्जा ग्यासबेग का मकबरा है। परम्परागत चार बाग योजना के यह ठीक बीचों–बीच में बनाया गया है। बहते हुए पानी की व्यवस्था के लिए तालाब, फुहारे, झरने और चौड़ी–चौड़ी नालियां बनाई गई हैं। इस इमारत में नालियां बहुत छिछली हैं जो मुख्य मकबरे के चारों ओर ही नहीं, बाग के प्रत्येक उपभाग के साथ भी सम्बद्ध की गई हैं। मुख्य द्वार पूर्व की ओर है। पश्चिम की ओर अर्थात यमुना के ऊपर एक विशाल बारहदारी है। ये सभी लाल पत्थर की कृतियां हैं जिनमें जड़ाऊ काम के लिए श्वेत संगमरमर का व्यापक प्रयोग हुआ है। इस मकबरे में बाहर की तरफ की दीवारों और अट्टालिकाओं पर दोनों मंजिलों में बड़ा सुन्दर जड़ाऊ काम किया गया है। शिल्पकारित फूल–पत्तियों के और रेखांकित डिजाइन अधिक है। ईरानी फूलों और वृक्षों, शराब पीने के जाम और शराब का भी खुलकर प्रयोग हुआ है। इंच–इंच पर श्वेत संगमरमर में जड़ाऊ काम का यह अलंकरण बड़ा सुरूचिपूर्ण है।

जहाँगीर के राज्यकाल में और बहुत–सी इमारतें बनवाई गई। जहांगीर ने अपनी मां का मकबरा भी सिकन्दरे में ही बनवाया। कांच महल नामक एक सुन्दर महल का भी निर्माण कराया। वह अपनी आत्मकथा में एक और महल का उल्लेख करता है जो अब शेष नहीं है। इनके अतिरिक्त जहाँगीर के कुछ बाग भी विख्यात है। कश्मीर में श्रीनगर में उसने 1613 में शालीमार बाग बनवाया जो संसार के सुन्दरतम बागों में गिना जाता है। यह विभिन्न तलों में बनाया गया है। फुहारोंदार एक बड़ी नहर इसके मध्य में बहती है। पत्थर की बीथिकाओं ओर सीढ़ियों के बीच में बहती हुई झरने के रूप में गिरती हुई यह नहर बड़ा सुन्दर वातावरण उपस्थित करती है। स्थान–स्थान पर तालाबों और मण्डपों की व्यवस्था है। डल झील पर आसफ खां ने ऐसा ही एक सुन्दर बाग निशात बाग का निर्माण कराया। मध्यकाल के बागों में ये दोनों सर्वोत्कृष्ट उद्यान हैं जिनमें केवल पेड़ पौधे ही नहीं हैं बल्कि मनोरम वास्तु विधानों के साथ बहते हुए पानी की सुन्दर व्यवस्था भी की गई है।

जहांगीर ने लाहौर में रावी के किनारे दिलकुश बाग बनवाया। वह आगरे की गर्मी सहन नहीं कर पाता था और लाहौर या कश्मीर में रहता था। दिलकुश बाग पर उसने विशेष ध्यान दिया क्योंकि यहीं उसने अपना मकबरा बनाने का निश्चय किया था। बाग को चार बड़े भागों में और प्रत्येक भाग को फिर चार उप–भागों में नहरों द्वारा बांटा गया है। केन्द्र में मकबरे की योजना है। 1627 में उसकी मत्यु के पश्चात नूरजहां ने यह मकबरा बनवाया। यह एक मंजिला है। कोनों पर पांच मंजिल की मीनारें सम्बद्ध है। डिजाइनों में फूलपत्तियों की बहुतायत है। जहांगीर को प्रकृति से बड़ा प्रेम था और वह चित्रकला में और अपनी इमारतों में ये प्राकृतिक रूपक ही प्रदर्शित करना चाहता था।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

मुगल स्थापत्य कला के इतिहास में ''**शाहजहाँ**'' का शासनकाल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रमाणित हुआ। इस काल में भारतीय वास्तुकला अपने चर्मोत्कर्ष को प्राप्त हुई। शाहजहाँ के शासन काल को अगर वास्तु शिल्प का स्वर्णयुग कहकर पुकारा जाता है[17] तो इसमें उसके द्वारा निर्मित कराए गए भवनों का सर्वाधिक महत्त्व है। स्थापत्य कला के भावात्मक प्रदर्शन के पक्षधर शाहजहाँ थे। जिसके शासन काल में उत्कृष्ट वास्तुशिल्प का निर्माण हुआ। इस निर्माण कार्य का सबसे महत्वपूर्ण शिल्प विन्यास आगरा का ''ताजमहल'' है जो आज भी अपने रूप सौन्दर्य के कारण चर्चा में रहता है। शाहजहाँ वास्तुकला का अनन्य प्रेमी था उसने शाहजादे के रूप में ही इस क्षेत्र में अपनी अभिरुचि का परिचय देना आरम्भ कर दिया था।

शाहजहां इमारतें बनवाने में बड़ी रूचि रखता था और अपने 30 वर्ष के शासन काल में उसने बड़े–बड़े महल, मस्जिदें ओर मकबरे बनवाये। इनमें मोती मस्जिद, दिल्ली का लाल किला जो लाल बलुआ पत्थर और ताजमहल जैसी विश्वविख्यात इमारतें हैं। ये सभी इमारते या तो संगमरमर की बनवाई गयीं या इन पर श्वेत चूने का प्लास्टर किया गया जिससे यह संगमरमर की जैसी लगे। शाहजहां वास्तु में सौन्दर्य तत्त्व को बहुत अधिक महत्व देता था। उसके काल में मुगल वास्तुकला में सौन्दर्य सम्बन्धी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। सादे मेहराव की अपेक्षा दांतेदार और विशेषकर 4 (चार) दांतों का मेहराव बनने लगा। यह अलंकृत खम्भों पर आधारित किया जाता था। तोड़े और छज्जे प्रयुक्त होते रहे। उर्ध्व रचना में छत्रियों का उपयोग बढ़ गया। गुम्बद अधिकांशतः उंचा उठा हुआ, बल्वाकर बनाया जाने लगा। उस पर बड़े विशाल पद्मकोष ओर कलश सुशोभित होने लगे। इमारत के उठान और विभिन्न भागों में तालमेल बनाए रखने के सिद्धान्तों को बहुत अधिक महत्व दिया जाने लगा। अलंकरण की परिभाषा में अब अधिकांशतः रंगीन कीमती पत्थरों का जड़ाऊ काम रह गया। जिसका प्रयोग भी बहुत कम केवल चुनिन्दा स्थानों पर होता था। शाहजहां के काल में मुगल वास्तुकला अपनी परिपक्व अवस्था पर पहुंची और कुछ अत्यन्त सुन्दर इमारतों का निर्माण हुआ। यह निःस्सदेह वास्तु का स्वर्णयुग था और विकास की वह चरम स्थिति थी। [2]

शाहजहाँ की देख–रेख और उसके संरक्षण में आगरा, लाहौर, दिल्ली, काबुल, कश्मीर, अजमेर, कान्धार, अहमदबाद आदि अनेक स्थानों में सफेद संगमरमर के महल, मस्जिद, मण्डप, मकबरे आदि का निर्माण किया गया। शाहजहाँ ने आगरे तथा लाहौर में अकबर के द्वारा लाल पत्थरों से निमित अनेक भवनों का नवनिर्माण करवाकर उनके स्थान पर सफेद संगमरमर के भवनों का निर्माण करवाया। आगरा के किला में सम्राट ने दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास महल, शीश महल, मोती महल, आगरा के किले में मस्जिद मुस्समन बुर्ज तथा अनेक बनावटों का निर्माण करवाया।[18] दीवान–ए–खास की सुन्दरता इसमें दोहरे खम्भों और सजावटों के मुस्समन बुर्ज की लम्बी–चौड़ी दीवार पर अप्सराएँ शोभायमान है। इस तरह यह स्थापत्य अपने आप में एक बेजोड़ शिल्प कला को नियोजित करती है। इसका वास्तुशिल्प अभिनव और हृदयग्राही है।

आगरे के किले में शाहजहां ने अकबर की बनवाई लाल पत्थर की बहुत–सी इमारतों को तुड़वा दिया और उनके स्थान पर श्वेत संगमरमर के महल बनवाये। खास–महल आवास के लिए बना। यह अंगूरी बाग

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

नामक एक बाग के सामने एक उंची चौकी पर स्थित है। सामने एक बड़े हौज में फुहारों की व्यवस्था है। अन्दर के कक्ष में संगमरमर पर सुनहरी चित्रकारी की गई। बाहर दालान में कटाई का अलंकरण भी है। इस प्रयोग के उत्तरी पूर्वी कोने पर शीर्ष–महल स्थित है। यह नहाने का कमरा नहीं है जैसी भ्रांति प्रचलित है। यह गर्मी के मौसम में रहने के काम आता था। इसमें पानी के झरने, फुहारे और एक नहर की व्यवस्था है। अन्दर की दीवारों पर शीषे का जड़ाऊ काम किया गया है जो किसी भी कृत्रिम प्रकाश में दमदमाता है। इस शीशे की कला की प्रेरणा बाइजेन्टाइन सम्राज्य से आयी जहाँ इसका भीतरी अलंकरणों में व्यापक प्रयोग होता था। तत्कालीन इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी ने इस संबंध में ''हलब नगर'' का उल्लेख भी किया है। भारत में मध्यकालीन शीश महलों में यह शीश–महल सर्वोत्कृष्ट कृति है।[3]

शीश महल के ठीक ऊपर दीवाने–खास स्थित है। यह प्रशासकीय इमारत है, जहां विशेषरूप से दरबार का आयोजन होता था और केवल विशिष्ट व्यक्तियों, मंत्रियों और मनसबदारों को ही आमंत्रित किया जाता था। यहां महत्वपूर्ण विषयों पर विचार–विमर्श होता था। यहीं औरंगजेब ने शिवाजी से पहली बार भेंट की थी। इसमें अन्दर एक विशाल हॉल है जिसमें अत्यन्त कलात्मक शिलापट्ट लगे हैं। बाहर चौड़ा दालान है जिसमें तीन तरफ दुहरे खम्भों का प्रयोग किया गया है। इन पर 8 दांतों वाले बड़े सुन्दर मेहराव बने है। इस इमारत का सम्पूर्ण सौन्दर्य इन दुहरे खम्भों और इन मेहरावों के कारण है। इन इमारतों में अधिकांशतः समतल छतों का प्रयोग हुआ है।

शाहजहां ने दिल्ली में लाल किले का निर्माण कराया। यह आगरे के किले की तरह दृढ़ और अमेद्य नहीं हैं, न ही शाहजहां के युग में ऐसे विशाल दुर्ग की बनाने की कोई आवश्यकता ही थी। यमुना की ओर आवास के बड़े–बड़े महल बनाए गए। एक बड़ी नहर इन महलों के बीच में होकर जाती, और इससे सम्बद्ध स्थान–स्थान पर झरनों, फुहारों और लघु तालाबों का विधान बनाया गया। इसे नहरे बहिश्त या स्वर्ग की नहर कहते हैं। यह नहर हम्माम, दीवान–ए–खास, ख्वाबगाह, मिजान–ए–इन्साफ आदि महलों में होती हुई रंगमहल में आती थी। आवाम के ये महल इस प्रकार जल महल से लगते हैं। दीवाने–खास में इसका सौन्दर्य ऐसा अनोखा है कि शाहजहां ने वहां फारसी में यह उक्ति अंकित करा दी है –''अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह यही है।'' रंगमहल में उसकी छटा दर्शनीय है। विशेषरूप से इसके मध्य में स्थित कमल–सर का सौन्दर्य तो स्वर्णिम है। बीस फुट वर्ग के एक भाग में संगमरमर का जड़ाऊ एक विशाल कमल का फूल बनाया गया है जिसे मध्य में कमल की कली जैसा ही एक फुहारा है। पानी फुहारे से निकलकर पंखुड़ियों पर गिरता है और पंखुड़ियों से गिरकर नहर में मिल जाता है। पानी की गति से पंखुड़ियां उठती गिरती हुई प्रतीत होती हैं।

इस महलों के समीप ही मोती–मस्जिद स्थित है। शाहजहां ने इसे बनवाना प्रारंभ किया किन्तु 1658 ई. में औरंगजेब ने उसे कैद कर लिया और औरंगजेब के राज्यकाल में 1669 ई. में इसे पूर्ण कराया गया। यह मस्जिद बहुत छोटी है किन्तु बड़ी सुन्दर है। बाहर लाल पत्थर की चार–दीवारी है। अन्दर की सारी रचना श्वेत संगमरमर की है। आंगन के पश्चिम में एक उंची चौकी पर आराधना भवन है। इसमें तीन मेहराव है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

मध्य का मेहराव उंचा और बड़ा है। इसके ऊपर का छज्जा और शीर्ष मुड़े हुए है। जैसे आगरे की नगीना मस्जिद में हैं। किन्तु यहां यह तत्व और अधिक विकसित रूप में प्रयुक्त हुआ है। मुड़ी हुई गोल छत का ऐसा रूपक इस आंगन में प्रवेश द्वार के अन्दर की ओर भी बनाया गया है। यह बड़ा क्रान्तिकारी प्रयोग था।

शिल्पविदों का मानना है कि मोती महल की कारीगरी मुगल कालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ठ ''पवित्रता और ललित कला की अनुपम कृति वास्तुकला के दृष्टि से आगरे के किले की सफेद संगमरमर जैसी उत्कृष्ट है वैसी दूसरी इमारत नहीं।''[4]

1638 ई. में दिल्ली में सम्राट ने एक नये दुर्ग का निर्माण करवाया जो दिल्ली का लाल किला के नाम से चर्चित हुआ। उसके भीतर एक नगर बसाया गया जिसका दिल्ली के किले का नाम शाहजहाँनाबाद रखा गया। दिल्ली के लाल किले के भीतर सफेद संगमरमर की सुन्दर इमारतें बनायी गयीं, जिनमें मोतीमहल, हीरामहल, रंगमहल दीवाने खास, दीवाने खास आदि उल्लेखनीय हैं। इस तरह दिल्ली में भी शाहजहाँ के शासन काल के समय सापेक्ष विभिन्न प्रकार के स्थापत्य कलाएँ प्रभावी हुई, जिससे दिल्ली की समृद्ध और सुन्दरता को नया आयाम मिला। इस दौर में दिल्ली में अस्तित्व में आए दीवाने आम एवं दीवाने खास में पच्चीकारी कला में अत्यन्त मनमोहक कारीगरी किया गया है। इसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि ''जो कार्य जहाँगीर के समय में तूलिका से किया गया वह इस समय छेनी और कन्नी से किया गया उसे शाहजहाँ ने एक नया शिल्पविन्यास दिया। लाल किला में शाहजहाँ ने संगीत भवन, कई दफ्तर तथा बाजार भी बनवाएँ। हर महल के सामने फूलों की क्यारियाँ एवं फव्वारे निर्मित किये गये, जिनसे उनकी सुन्दरता में चार चाँद लग गये। सारे महल जाली, खम्भों, मेहरवों और चित्रों से सुसज्जित हैं। इन महलों के फर्स संगमरमर के बने हुए हैं। जिससे उनकी स्वच्छंदता और सुचिता सादगी के बावजूद आकर्षण का केन्द्र बनी। वास्तुशिल्प में शाहजहाँ के कुशल शिल्पकार अपनी प्रतिभा और स्थापत्य कला का अद्भुद प्रदर्शन किया है।

लाल किले में स्थिति भवनों में रंगमहल की शोभा अति न्यारी है। इसमें फव्वारे की जो व्यवस्था की गयी थी उससे इसकी शोभा और भी अधिक निखर उठती थी। यह अत्यन्त सुन्दर तथा मनोहर है और इसकी पच्चीकार कलात्मक एवं उत्कृष्ट है। शाहजहाँ के द्वारा इसके एक दीवार पर खुदवाया गया यह वाक्य ''यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्गीय आनन्द है तो यह यही है'' विल्कुल सत्य प्रतीत होता है। इस तरह इन अभिव्यंजनाओं के माध्यम से शाहजहाँ के वास्तुकला प्रियता का दिग्दर्शन होता है।

शाहजहाँ ने अकबर द्वारा निर्मित लहौर भी उल्लेखनीय परिवर्तन करवाये थे। सम्राट ने इस किले के भीतर चालीस खम्भों का दीवाने–आम, लाहौर के किले में बुर्ज, शीशमहल, रुबाबगाह, आदि का निर्माण करवाया गया। परिवर्तन के साथ शाहजहाँ के द्वारा मिर्मित भवन अपनी सुन्दरता एवं कलात्मकता के लिए विख्यात हैं। फिर भी शिल्पगत सादगी और भावनात्मक प्रभावशीलता स्थापत्यों को एक नया आयाम देती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

शाहजहाँ ने लाल किले के पास दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद बनवाया। जामा मस्जिद अपनी विशालता एवं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध समझा जाता है, किन्तु कला की दृष्टि से इसे बहुत उत्कृष्ट नहीं कहा जा सकता है।

शाहजहाँ के भवनों में पत्नी मुमताज बेगम की समाधि पर निर्मित विश्वविख्यात ताजमहल, जो आगरे में यमुना नदी के तट पर सुन्दर प्राकृतिक दृश्य के भीतर खड़ा किया गया है। ताजमहल को विश्व प्रसिद्ध स्थापत्य कहा जाता हैं इसका निर्माण 1631 ई में प्रारम्भ हुआ जो 1653 ई. में बनकर तैयार हुआ। उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार इस अद्भुद वास्तु शिल्प को स्वरूप देने और निर्माण में नौ करोड़ रूपये व्यय हुये। इतिहासकार स्मिथ का मत है कि ''ताजमहल का निर्माण यूरोपीय तथा एशियायी कलाकारों ने किया था।'' किन्तु आधुनिक शोधों में प्राप्त तथ्य इस बात का समर्थन नहीं करते है। ताजमहल के निर्माण में तत्कालीन प्रवर शिल्पकार जो भारत में रह रहे थे की कुशलता का प्रतीत है। सम्भवतः ताजमहल की योजना उस्ताद अहमद के द्वारा की गयी थी तथा इसके निर्माण हेतु बहुत से बाहरी कारीगर तथा सुलेखकों को अनुबंधित किया गया था।[6] परसी ब्राउन के मत में ''ताजमहल का निर्माण प्रायः मुसलमान शिल्पकारों से ही हुआ था, किन्तु इसकी चित्रकारी सामान्यतः हिन्दू कलाकारों के द्वारा की गयी थी।'' महल पर पेट्राड्यूरा पच्चिकारी जैसी कठिन चित्रकारी का भार कन्नौज के हिन्दू कलाकारों को सौंपा गया था।[5] ताज की रूप–रेखा प्रधान रूप से फारसी ही है, किन्तु कुछ अंश में हिन्दू शिल्पकला तथा हिन्दू साजो–सज्जा की समिश्रण भी हम इसमें पाते हैं। जिससे स्थापत्य में एक अलग सादगी पूर्ण भावात्मक आग्रह है जो भारतीय वास्तुकला की अपनी पहचान है।

ताजमहल में भी चार बाग योजना का प्रयोग हुआ किन्तु उसमें एक बड़ा प्रभावी परिवर्तन किया गया। अब तक मकबरे चार–बाग के मध्य में बनाये जाते थे। यहां मध्य में संगमरमर का एक तालाब दिया गया और मकबरे को बाग के उत्तर में ठीक यमुना नदी के ऊपर एक बृहत आयताकार मंच पर बनाया गया।

इसके एक ओर एक मस्जिद है तथा दूसरी ओर वैसा ही मेहमानखाना है। ये दोनों लाल पत्थर की इमारतें हैं जिन में संगमरमर का प्रयोग हुआ है। अन्दर उत्कृष्ट चित्रकारी की गयी है। जिस चौकी पर ताजमहल स्थित है वह 19 फिट ऊंची है। ये सारी रचना श्वेत संगमरमर की है। मुख्य मकबरा वर्गाकार है किन्तु उसके कोणों को इस प्रकार काट दिया गया है जिससे वह अठपहलू प्रतीत होता है। इन कोनों के ठीक सामने चौकी के कोनों पर चार सुन्दर मीनारे हैं जिनके ऊपर छत्रियां सुशोभित हैं। ये मीनारे बड़े आकर्षक ढ़ग से इमारत को चारों ओर घेरे हुए हैं।

प्रत्येक भुजा में एक विशाल मेहराब है जिसके दोनों ओर दुमन्जिले लघु–मेहराब हैं। कोनों पर भी ऐसे ही लघु मेहराब है। सामने के मेहरवों की योजना आयताकार है जबकि कोनो को मेहराब की अठपहलू योजना पर बनाया गया है जिससे वे किसी भी स्थान से देखने पर मुखपट से सम्बद्ध दिखाई देते हैं। अन्दर 80 फिट उंचा एक विशाल हाल है। कोनों पर चार छोटे अठपहलू कमरे हैं। भुजाओं के केन्द्र में वर्गाकार कक्ष हैं। इन सबको बड़े–बड़े आलिन्दों द्वारा सम्बद्ध किया गया है। दूसरी मंजिल पर भी यही विधान है। प्रवेश द्वार को

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

छोड़कर सभी बाहरी मेहराबों को छोटे–छोटे शीशे के टुकड़ों को पत्थर की जालियों में लगाकर बन्द कर दिया गया है।

अन्दर के हाल में मेहरावों के ऊपर कुरान की आयतों के अभिलेख अंकित हैं। शिलापट्टों पर विशेष अलंकरण किया गया है। इनके मध्य में संगमरमर में कमनीय ढंग से काटे गए घट–पल्लव हैं जिनमें फूल पत्तियों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनके हाशियों में रंगीन पत्थरों का जड़ाऊ काम है। ऐसा ही जड़ाऊ काम कब्रों के चारों ओर बने संगमरमर के पर्दे की सुन्दर जालियों के हाशियों पर है। ये महीन जालियां, कलात्मक घट–पल्लव और जड़ाऊ काम अत्यन्त उत्कृष्ट धर्णी की कलाएं है और अपने–अपने क्षेत्र में अद्वितीय हैं। संसार में ऐसे सुन्दर शिलापट्टों का अन्यत्र कहीं प्रयोग नहीं हुआ है।

किसी भी तत्कालीन इतिहासवेत्ता द्वारा ताजमहल के स्थापत्य का नाम नहीं दिया गया है। वास्तव में ''ताज'' मुगल वास्तु शैली के क्रमिक विकास की चरमावस्था है और इसके सभी तत्वों का पहले की इमारतों में अध्ययन किया जा सकता है। चार बाग योजना और बहते हुए पानी की व्यवस्था, ऊंची चौकी, मीनारे, ईवान, गुम्बद के साथ छत्रियों का पंचरत्न प्रयोग आदि सभी तत्व प्रयोगात्मक रूप में प्रयुक्त हो चुके थे। ताजमहल में उन्हें सुन्दरतम और परिपक्वावस्था में उपयोग में लाया गया है।

अब्दुल हमीद लाहौरी स्पष्ट लिखता है कि ''वह जमीन जो इस मकबरे के लिए चुनी गई मूल रूप से राजा मानसिंह की थी और इस समय उनके पोते राजा जयसिंह के अधिकार में थी। उन्हें इसके बदले में सरकारी जमीन दे दी गई और यहां नीवों से इमारत बनाने का काम प्रारम्भ हुआ। अभिलेख इसका समर्थन करता है।''[6] ताजमहल बनने में लगभग 17 वर्ष लगे ओर वहां निरन्तर 20000 मजदूरों ने काम किया। मित्र राज्यों से विभिन्न प्रकार के पत्थर प्राप्त हुए। सरकारी खजाने से 40000 तोला सोना दिया गया जिसकी कीमत उस समय 6 लाख रूपये थी।

ताजमहल के शिल्प विधन पर अलग–अलग क्षेत्रों के विद्वानों की अपनी अपनी दृष्टि पर टिप्पणी दी है पर सर्वमान्य यह है कि ताजमहल केवल एक मकबरा ही नहीं है, यह एक अत्यन्त उत्कृष्ट कलाकृति है। विशेषकर चांदनी रातों में इसकी शोभा देखते ही बनती है। यह एक सुन्दर स्मारक है और इससे भी अधिक, यह एक कलापूर्ण प्रतीक है। मुमताज के सौन्दर्य का प्रतीक उसके व्यक्तित्व, उसके अद्वितीय सौन्दर्य का सजीव प्रतिबिम्ब। ताजमहल को व्यक्तित्व और सौन्दर्य का ऐसा परिपक्व प्रतिष्ठापन जिसके चरणों में वास्तु के सारे सिद्धान्त लौट रहे हों, शायद कही और किसी भी युग में नहीं हुआ है।[7]

संदर्भ स्रोत :–

[1]. हरिश्चंद वर्माः मध्यकालीन भारत (खण्ड–2)मुगल समाज और संस्कृति पृ.–506

[2]. अवधविहारी पाण्डेयः मध्यकालीन भारत (द्वितीय खण्ड) मुगल भारत पृ. 564

[3]. अब्दुल इमीद'– लाहौरी : बादशाहनाम ई एण्ड डी vii पृ–113

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

[4].नीरज श्रीवास्तव : मुगल वास्तुकला : शैली एवं विशेषताए पृ.–135

[5].बी.ए. स्मिथः अकबर द ग्रेट मुगल पृ.–107

[6].सी. जे. बाउल : द क्वाएलन आफ इण्डिया पृ–81

[7].अबदुल इमीद लाहौरीः बादशाह नामा ई एण्ड डी vii–117

[8].वही पृ.–121